B.A. II Hindi Hons.

राम भक्ति साहित्य की प्रवृत्तियाँ

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस॰एन॰ कॉलेज, जहानाबाद

भक्ति ~~क~~ का उद्भव एवं विकास विषय पर विचार के क्रम में हमने देखा कि भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएं प्रवाहित हो रही थी — (I) निर्गुण (II) सगुण। निर्गुण में भी संत काव्य एवं सूफी काव्यधारा समान रूप से प्रवहमान थी। वैसे ही सगुण भक्ति काव्यधारा में भी दो ~~समान~~ धाराएं समान रूप से प्रवाहित थी — रामभक्ति काव्यधारा एवं कृष्णभक्ति काव्यधारा। इस स्थल पर हम राम भक्ति काव्यधारा या रामभक्ति साहित्य की प्रवृत्तियों पर विचार करेंगे।

(1) राम का स्वरूप :— राम भक्तों के उपास्यदेव श्रीराम भगवान विष्णु के पूर्ण अवतार हैं, वे धरती पर पापियों का संहार करने तथा ~~अति~~ भक्तों के उद्धार के लिए अवतरित हुए हैं। सीता लक्ष्मी का अवतार हैं और राम की लीला सहायिका के रूप में इस धरा धाम पर अवतरित हुई हैं। भक्तों की मान्यता है —

जब-जब होहि धरम की हानि। बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब-तब धरि हरि विविध शरीरा। मेटहि सुजन भव पीरा॥

भगवान राम में शील, शक्ति एवं सौन्दर्य का समन्वय है। राम परमशीलवान हैं, राजकुमार होने के बाद भी वे बड़ों का सम्मान, छोटे को स्नेह और गुरुजनों को आदर देते हैं। उनके इस भाव से सद्गुण झलकता छन-छन है। वैसे ही राम में अनन्त सौन्दर्य का आधान हुआ है। वे सामान्य नहीं वरन कोटि मनोज लजावन हारे हैं। उन्हें देखकर सभी अपनी सुध-बुध खो देते हैं। उनके इस रूप पर समस्त अयोध्यावासी मुग्ध हैं। वैसे ही राम की भुजा में ~~अ~~ अनन्त शक्ति है जिसके बल पर वे ताड़का, सुबाहु और असुरों का संहार कर देते हैं। यही क्यों ~~रा~~ राम का चरित उनके शक्तिशाली स्वरूप की गाथा है। बाली, रावण, कुम्भकरण

दैत्यगण राक्षसगण उनके हाथों मारे जाते हैं। राम के चरित में देवत्व का आरोपण नहीं है वरन वे अपने कर्मों से देव स्वरूप बन जाते हैं। वे मर्यादापुरुषोत्तम हैं। विश्व में मर्यादा की स्थापना ही उनके जन्म या अवतार का हेतु है। राम एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श सखा, आदर्श राजा, एवं आदर्श शत्रु हैं। जीवन और समाज के हर क्षेत्र में आदर्श का उच्च मानदंड स्थापित कर भारत के इतिहास में युग-युगान्तर के लिए अमर हो गये। राम जैसा आदर्श चरित्र विश्व साहित्य में ढूँढे नहीं मिलेगा।

(11) समन्वयात्मकता :- जिस काल में रामकाव्यधारा अपने अस्तित्व में आयी उस समय समाज नाना प्रपंचों से पीड़ित था। वैष्णव एवं शैव में अपनी श्रेष्ठता के लिए प्रति दिन वाग्युद्ध हुआ करता था। वैसे ही सगुणवादी निर्गुण वादियों से आये दिन भिड़ते रहते थे। उसी प्रकार शाक्तों एवं वैष्णवों में भी बैर भाव पनपता जा रहा था। समाज में ऊँच और नीच की खाई चौड़ी हो रही थी। तात्पर्य यह कि संपूर्ण समाज नाना कारणों से उद्वेलित था। कबीर ने इस उद्वेलन को शांत करने के लिए ~~डॉट फटकार~~ डाँट-फटकार का सहारा लिया किन्तु उनका यह प्रयास उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ ऐसे में रामकाव्यधारा के कवियों ने बड़ी ही कुशलता से समाज में समन्वय की स्थापना कर समाज में शान्ति एवं सौमनस्य की स्थापना की। वैष्णवों और शैवों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए तुलसीदास ने स्वयं राम से कहलवाया - शिवद्रोही मम दास कहावा। सो नर मोहि सपनेहुँ नहीं भावा।। वैसे ही सगुण निर्गुण के झगड़े यह कह कर समाप्त करवाया कि-

अगुनहि, सगुनहि नहीं कछु भेदा। उभय हरहिं गावहिं वेद।